B.A-III paper-V

V प्राकृत शिलालेखीय साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालें। या सामान्य परिचय दें।

Ans- प्राकृत शिलालेखीय साहित्य अत्यन्त प्राचीन है। इससे प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की ऐसी जानकारी प्राप्त होती है जो अन्य सूत्रों से आज उपलब्ध नहीं है। इनसे जो जानकारी हमें प्राप्त होती है वह अन्य सूत्रों से प्राप्त जानकारी की अपेक्षा अधिक विश्वस्त और प्रमाणिक कही जा सकती है।

प्राकृत भाषा का शिलालेखीय साहित्य संस्कृत भाषा की शिलालेखों की अपेक्षा कई बातों में विशिष्ट है। क्योंकि प्राकृत शिलालेख सबसे प्राचीन है ईस्वी सन् की प्रथम शती तक के समस्त शिलालेख प्रायः प्राकृत में ही है। इन शिलालेखों में व्यक्ति के परिचय के साथ साथ उस समय के राजाओं के चरित्र पर भी प्रकाश डाला गया है। तथा उस समय के राजाओं के द्वारा किये गये प्रजा के भलाई के लिए किये गये कार्यों का उल्लेख प्राकृत शिलालेख साहित्य में सुन्दर ढंग से किया गया है। लिखित रूप में मध्य युग का पुरातन जो भी साहित्य उपलब्ध है वह शिलालेखी प्राकृत का है।

शिलालेखीय साहित्य का प्राचीनतम रूप अशोक के शिलालेख में सुरक्षित है। इन शिलालेख की दो लिपियाँ है ब्राह्मी और खरोष्ठी है। प्राचीन अभिलेख शिला-खण्डों, शिला-पटों, स्तम्भों, प्रतिमाओं, स्तूपों गुफाभित्तियों, ताम्र-पत्रों, सिक्कों एवं मुहरों आदि पर अंकित मिलते है। सम्राट अशोक के अभिलेख में प्राकृत भाषा में ही संविधान लिखें गये थे। तथा धर्म-शासन सम्बन्धी अनुज्ञाएं है।

ब्राह्मी लिपि का प्राचीनतम रूप, जो इस समय हमारे सामने है वह अशोक के राज्यकाल अथवा उससे कुछ ही पहले का है। उसके रूप को देखते हुए यह सहज कहा जा सकता है कि उसके विकास में निश्चय ही कुछ सौ वर्ष लगे होंगे। अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि का जो आदिम रूप मिलता है आवश्यकतानुसार संशोधित परिवर्तित होकर अनेक प्रादेशिक रूप धारण किया और फिर उनसे भारत में प्रचलित प्रायः सभी लिपियों का विकास हुआ।

ब्राह्मी लिपि के साथ-साथ अशोक के कतिपय अभिलेख खरोष्ठी, आरामेइक और यवन लिपि में भी

Scanned with CamScanner

लिखे पाये गये है। इससे पता-चलता है कि इस देश में ब्राह्मी साथ-साथ इन लिपियों का भी प्रचार था। खरोष्ठी का प्रयोग अशोक के धर्मलेखों के अतिरिक्त विदेशी आक्रमकों के अभिले- और सिक्कों पर भी हुआ है। इस प्रकार परवर्ती काल में इसका विस्तार मोटे तौर पर पूर्व में मथुरा और दक्षिण भा में सिद्धपुर तक पाया जाता है।

अधिकांश प्राचीन प्राकृत शिलालेख पद्यात्मक अथ काव्य रूप में लिखे गये है। उनमें काव्यों के छन्द, अलंकार, रस प्रतीक आदि सभी की छटा देखने को मिलती है। प्राचीन शिलाले के विविध प्रसंगों में सामाजिक और धार्मिक संस्कारों आदि की अनेक चर्चा पायी जाती है। जिनसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप तत्कालीन सामाजिक विषयों की जानकारी प्राप्त होती है और जीवन पर प्रकाश पड़ता है।